thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15

सृष्टि संवत् 1960853115
विक्रम संवत् 2071
दयानन्दाब्द 191

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र
E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : मा० रामपाल आर्य
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर
वर्ष : 11 अंक : 13 रोहतक, 28 अगस्त, 2014 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

'स्वराज्य' को 'सुराज' भी बनाया जाये

सदा सद्धर्म्म ही संसार को,
सत्पथ सुझाता है।
वही कल्याण करता है,
वही सुख-शान्तिदाता है।

आज स्वतन्त्र देश या **'स्वराज्य'** प्राप्त भारतवर्ष की बड़ी सोचनीय स्थिति है। महंगाई, भ्रष्टाचार, अनाचार, गुटबन्दी, मारधाड़, स्वार्थान्धता और अपराधों की दिनों-दिन वृद्धि हो रही है। लोग भूखों मर रहे हैं। दिन-दहाड़े चोर तथा डाकू अपनी कुत्सित करणी कर रहे हैं। महंगाई का तो ठिकाना ही नहीं। भारत में महाभयंकर दुर्भिक्ष संवत् 1956 वि० में हुआ था। इस **'छप्पनियाँ अकाल'** का सारे देश पर बुरा प्रभाव पड़ा। परन्तु उस अकाल में भी रुपये के साढ़े सात सेर गेहूं बिकते थे। स्वर्गीय महाकवि शंकर ने उक्त अकाल की विकरालता के सम्बन्ध में एक कविता लिखी थी जो उनकी रची **'चौक चाँदनी'** नामक छात्रों की पुस्तक में मुद्रित है। यह पुस्तक संवत् **'छप्पन'** में ही छपी थी। उक्त कविता की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं—

अब कौ संवत् ऐसो आयो।
भारत में दारुण दुःख छायो।
गली-गली में भूखे डोलें।
व्याकुल बिलखत वाणी बोलें।
बिके डेढ़ पंसेरी गेहूँ।
जिनमें कढ़ें तीन पा सेहूँ।

यह उस दुर्भिक्ष का करुण-क्रन्दन है, जब रुपये के साढ़े सात सेर गेहूँ बिकते थे। आज के सुख मूल 'स्वराज्य' की ओर ध्यान दीजिए जब पुड़ियों में गेहूं बिक रहे हैं अर्थात् एक रुपये के तीन पाव! दूध-घी की महार्घता की तो बड़ी ही शोचनीय स्थिति है। कहा जाता है कि पूर्वापेक्षा देश की जनसंख्या बढ़ जाने से यह दुर्भिक्ष है। तो क्या बीस वर्षों में ही देश की जनसंख्या बढ़ गयी। अंग्रेजों के शासन में ऐसी महंगाई कब हुई ? साथ ही जनसंख्या

❑ हरिशंकर शर्मा

वृद्धि के साथ खेती भी बहुत बढ़ी है। ऊसर भूमि तक में भी अनाज की उत्पत्ति होने लगी। ट्रैक्टर ने अन्न की पैदावार बहुत बढ़ा दी है। फिर भी अभूतपूर्व भयंकर दुर्भिक्ष! वस्तुतः बात यह है कि सरकारी योजनाओं के नाम पर या व्यापारियों द्वारा जो विदेशी मशीन आदि मंगाई जाती हैं, उनकी कीमत यहां से खाद्य-पदार्थ बेचकर चुकायी जाती है। सोना (स्वर्ण) है नहीं, हमारे नोटों का विदेशों में प्रचलन नहीं, चांदी को कोई पूछता नहीं अतः जिन्स भेजकर ही सब कीमतें चुकाई जाती हैं। महात्मा गांधी ने इसी संकट से देश को बचाने के लिए विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया था जबकि आज उनकी भरमार है। सुना तो यहां तक गया है कि विदेशों को गोमांस तक भेजा जाता है। इसलिए इतना सबल-प्रबल आन्दोलन होने पर भी गोवध बन्द नहीं किया जाता।

'गोरक्षा' के लिये ऋषि दयानन्द ने तो **'गोरुणानिधि'** नामक पुस्तक लिखी है। महात्मा गांधी का स्पष्ट कथन है—**'आज गाय मृत्यु के किनारे खड़ी है। यदि वह नष्ट हो गई तो उसके साथ ही हम भी यानी हमारी सभ्यता और संस्कृति भी नष्ट हो जाएगी।'**

महर्षि दयानन्द और महात्मा गांधी दोनों की मातृभाषा गुजराती थी, परन्तु उन्होंने हिन्दी-प्रचार पर बड़ा बल दिया। महात्मा गांधी ने स्पष्ट कहा है—**'सभी सार्वजनिक सरकारी विभागों में हिन्दी भाषा का चलाना पहला काम है। अंग्रेजी को तो हमें उसी तरह निकाल फैंकना चाहिए जिस तरह हमने अंग्रेजों के राजनीतिक शासन को सफलता पूर्वक उखाड़ फैंका। अंग्रेजी के मोह से छुटकारा पाना स्वराज्य के लिए बहुत जरूरी है।'**

परन्तु इस युग में हमारे सत्ताधीश न गोवध बन्द करने को तैयार हैं और न ही हिन्दी को राजभाषा चाहते हैं।

भारत को स्वराज्य, धर्म्माधार-सत्य-अहिंसा एवं तप-त्याग द्वारा प्राप्त हुआ है। बापू ने इन्हीं तत्त्वों का प्रचार कर उन्हें कार्यान्वित किया-कराया। परन्तु वर्तमान शासन सत्ता, धर्म से कोसों दूर रहकर अपने को 'धर्मनिरपेक्ष' कहने में गौरव समझती है। इस सम्बन्ध में स्वराज्य सरकार ने महात्मा गांधी के निम्नलिखित शब्दों को सर्वथा भुला दिया है। पूज्य गांधी जी कहते हैं—

''मेरे नजदीक धर्महीन राजनीति कोई चीज नहीं। धर्म के मानी वहमों और गतानुगतिकता का धर्म नहीं है। द्वेष करने वाला और सड़ने वाला धर्म नहीं, बल्कि विश्वव्यापी सहिष्णुता का धर्म। मैं धर्म से भिन्न राजनीति की कल्पना भी नहीं कर सकता। वास्तव में धर्म को हमारे हर काम में व्यापक होना चाहिए। धर्म का अर्थ कट्टरपन्थ नहीं। उसका अर्थ है—विश्व की राजनैतिक सुव्यवस्था। बाहर की अपेक्षा भीतरी पवित्रता की ज्यादा जरूरत है। भीतर घुन लगा हो तो उस पर बनाया हुआ सर्वथा दोषहीन राज-विधान भी सफेद कब्र-सा होगा। हमें आत्म-पुष्टि और आत्म-त्याग की भावना बढ़ानी होगी। चरित्र के बिना सारा ज्ञान बुराइयों की जड़ है। नीति, सदाचार और धर्म एक ही बात है। धर्म के बिना जीवन बालू पर खड़े किये गये मकान की तरह है। हमारा देश धर्म के मूल सिद्धान्त सत्य एवं अहिंसा के द्वारा ही स्वतन्त्र हुआ है।''

विश्ववन्द्य महात्मा गांधी ने 'स्वराज्य' के लिये धर्म की कितनी आवश्यकता बताई है। धर्मपालन में जो कष्ट भोगने पड़ते हैं, वहीं 'तप' और जो 'त्यागना' पड़ता है वही 'त्याग' है। महात्मा गांधी कैसा 'स्वराज्य' चाहते थे, उन्हीं के शब्दों में पढ़िये—

''स्वराज्य का अर्थ है—अन्न-वस्त्र की बहुतायत। इतनी कि इसके बिना किसी को नंगा-भूखा न रहना पड़े। एक बालिका भी घोर अन्धकार में, निर्भयता के साथ घूम सके। एक-दूसरे की रक्षा तथा आदर करे। स्त्रियाँ मातायें और बहनें समझी जायें। ऊँच-नीच का भेदभाव न हो। रिश्वत लेने का पाप नष्ट कर दिया जाय। स्वराज्य का अर्थ यह नहीं है कि मुट्ठी भर लोग तो महलों में रहकर सुख भोगें और करोड़ों बुरी तरह संकट सहें। स्वराज्य में नीचे से नीचे और ऊँचे से ऊँचे आदमी को आगे बढ़ने का समान अधिकार मिलना चाहिए। न किसी का शोषण किया जाए और न करने दिया जाये। लेखनी और वाणी स्वतन्त्र रहें।''

कई वर्ष पूर्व आगरा में हुए 'धर्म-सम्मेलन' में माननीय श्री नन्दा जी ने भी अपने अध्यक्षीय भाषण में निम्नलिखित शब्द कहे थे जो अवश्य ही बड़े विचारणीय एवं उपयोगी हैं—

''धर्म का जितना प्रभाव बढ़ेगा, उतना ही भ्रष्टाचार कम होगा, लोगों के हृदयों में जो पाप है, उसे धर्म-भावना ही नष्ट कर सकती है। कानून या शासन का भय इसे कुचलने के लिए काफी नहीं। देश के धार्मिक विद्वान् और धर्म-प्राण जनता धार्मिक भावना जागृत करने के लिए कमर कसकर मैदान में आयें।''

माननीय श्री सम्पूर्णानन्द जी ने भी वाराणसी के 'संस्कृति-संघ' में यही भाव प्रदर्शित किये अर्थात् ''देश और समाज के हित में इस

शेष पृष्ठ 7 पर....

thearyasamaj.org

गोरक्षा राष्ट्र-रक्षा व गोहत्या राष्ट्र-हत्या है

❑ मनमोहन कुमार आर्य

संसार में तीन पदार्थ अनादि हैं, ईश्वर, जीव व सृष्टि। जीवात्मा का स्वरूप सत्य, चेतन, अल्पज्ञ, एकदेशी, सूक्ष्म, आकार रहित, जन्म-मरण धर्मा, शरीर को धारण करना, अपने ज्ञान व अज्ञान के अनुसार अच्छे व बुरे कर्म करना, ईश्वर उपासना, अग्निहोत्र करना, माता-पिता-आचार्यों व अतिथियों की सेवा, सत्कार, आज्ञापालन आदि का करना है। इससे वह अभ्युदय व निःश्रेयस को प्राप्त होता है। जीव जब मनुष्य जीवन में अच्छे-बुरे कर्मों को करता है तो कर्मों की कुछ स्थितियां ऐसी भी आती हैं जब किसी को मनुष्य का, किसी को गौ का एवं अन्यों को अन्य-अन्य प्राणियों का जन्म मिलता है। गौ को ही वर्तमान भाषा में गाय कहा जाता है। गाय इस संसार का एक सर्वोत्तम प्राणी है जिसके मनुष्य पर इतने उपकार हैं कि उनकी गणना नहीं की जा सकती। इसी कारण हमारे पूर्वजों ने गाय को मां की उपमा से नवाजा है। मां के गर्भ में पलकर बच्चा जन्म लेता है और मां के दुग्ध का पान कर उसका शरीर पुष्ट होकर वृद्धि को प्राप्त होता है। गाय का दूध भी मां के दूध के ही समान गुणकारी है। गाय के बाद बकरी का दूध गुणवत्ता में मां व गाय के दुग्ध के कुछ समान होता है परन्तु इनसे कुछ कम हितकर होता है। ऐसा देखा गया है कि यदि किसी निर्धन परिवार में जन्मे बच्चे की मां का किसी कारण से निधन हो जाये तो वह गाय और बकरी का दूध पीकर जीवित रहता है व उसकी पालना हो जाती है। अतः वेदों ने गाय के गुणों के कारण उसे **'गो विश्वस्य मातरः'** अर्थात् गाय सारे संसार के लोगों की मां है और **'गो विश्वस्य नाभिः'** अर्थात् गाय सारे विश्व की नाभि या केन्द्र है, की यथार्थ उपमाओं से गौरवान्वित किया है।

आइये, देखते हैं कि मनुष्य के जीवन के आधार क्या-क्या हैं? मनुष्य का शरीर अन्नमय है। अन्न में गोदुग्ध की गणना भी होती है। सभी अन्नों में गोदुग्ध प्रमुख अन्न है जिसका सेवन करके मनुष्य का शरीर न केवल पुष्ट होता है अपितु निरोगी, स्वस्थ, बलवान, तेजस्वी, ओजस्वी, मेधावी, बुद्धिमान, प्रज्ञावान होता है। दुग्ध के अतिरिक्त गाय से गोमूत्र, बछड़ा या बछड़ी, गोचर्म आदि भी प्राप्त होते हैं। गोमूत्र के अनेक उपयोग हैं जिसमें से औषधीय उपयोग भी होते हैं। कैंसर रोग को ठीक करने के लिए भी गोमूत्र का सेवन किया व कराया जाता है। गोमूत्र हमारे खेतों में एक उपयोगी खाद का काम करता है। इसी प्रकार से गोबर का उपयोग ईंधन, रसोई गैस बनाने, घर व यज्ञशाला आदि की लिपाई, खाद तैयार करने आदि के रूप में किया जाता है जो प्रायः निःशुल्क ही हमारे कृषकों को उपलब्ध हो जाता है। गोबर की खाद से जो अन्न उत्पन्न होता है वह शरीर को स्वस्थ व निरोग रखने के साथ उसे बलवान व मेधावी बनाता है। गोबर की खाद से उत्पन्न अन्न को खाकर ही श्रेष्ठ सन्तान का जन्म होता है, इसी लिए भगवान राम के पूर्वज व भगवान श्री कृष्ण गोपालन करते थे और अभीष्ट फल प्राप्त करते थे। इसी प्रकार से गो के बछड़े व बछड़ी की भी हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका है। बछड़े खेती द्वारा अन्न के उत्पादन में काम आते हैं व बैलगाड़ी में जोते जाते हैं तथा बछड़ियां आयु बढ़ने के साथ गाय बनकर हमारे परिवार के छोटे-बड़े सभी सदस्यों को गोदुग्ध से अमृतपान कराकर सभी को स्वस्थ व प्रसन्न रखती हैं। इस प्रकार से गाय का मनुष्य प्राणी से मां व पुत्र का सम्बन्ध है।

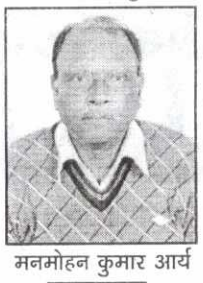

मनमोहन कुमार आर्य

राष्ट्र क्या होता है। मनुष्यों के समूह से मिलकर एक राष्ट्र बनता है। राष्ट्र की अपनी भौगोलिक सीमायें होती हैं। वहां की एक मुख्य भाषा होती है, बड़े राष्ट्रों में एक से अधिक भाषायें भी हो सकती हैं। एक ही प्रकार के रीति-रिवाज, संस्कृति एवं सभ्यता होती है अथवा कुछ बाह्य अन्तर होते हुए भी आन्तरिक एकता उनमें होती है। शिक्षा की व्यवस्था के साथ चिकित्सा की व्यवस्था होती है और सेना भी होती है जो पड़ोसी व अन्य बाह्य किसी शत्रु के द्वारा देश पर हमला करने पर राष्ट्र की रक्षा करती है। इस कारण से भी राष्ट्र का बलवान व स्वस्थ होना अति आवश्यक है तभी उसका अस्तित्व सुरक्षित रह सकता है। इसके लिए राष्ट्र के नागरिकों को भरपूर अन्न, गोदुग्ध, दही, मट्ठा, गोधृत आदि पदार्थों के साथ बैल व गायों की बड़ी संख्या में आवश्यकता होती है। यह गोधन कम होगा तो राष्ट्र सुरक्षित नहीं रह सकता। अतः हमें अपने जीवन की रक्षा की तरह ही गोधन की भी रक्षा करनी चाहिये तभी हम सुरक्षित व सुखी रह सकते हैं अन्यथा हम सुखी कदापि नहीं हो सकते। जिस राष्ट्र में गोहत्या होती है मानो वह राष्ट्र न होकर बुद्धिहीन मनुष्यों का समूह मात्र है। इसका कारण आगामी पंक्तियों में महर्षि दयानन्द के शब्दों में प्रस्तुत करेंगे। यहां इतना ही कहना समीचीन है कि गोहत्या से गो आदि पशुओं की संख्या में कमी होने से राष्ट्र में गोदुग्ध व इससे निर्मित होने वाले अन्यान्य पदार्थ तथा अन्न की कमी आदि होने से देशवासियों का स्वास्थ्य सुरक्षित नहीं रह सकता। आज अमेरिका बौद्धिक दृष्टि से समुन्नत देश होने पर भी वहां रोग अधिक होते हैं। तभी तो वहां साइड एफेक्ट वाली अंग्रेजी दवाइयों का प्रयोग सम्भवतः विश्व में सर्वाधिक होता है। यदि वहां के लोग बुद्धिमान हैं तो उन्हें स्वस्थ व निरोग रहने की जीवन पद्धति विकसित व उन्नत नहीं करनी चाहिये। यदि ऐसा करने पर भी रोग हो रहे हैं तो फिर उनकी जीवन पद्धति व भोजन-छादन में दोषों का होना ही रोग व दवाओं की भारती मात्रा में खपत का प्रमुख कारण है जिसे या तो वह अब तक जान ही नहीं पाये हैं या जीभ के स्वाद के कारण उसे छोड़ न पाने के कारण रोगी होते हैं। पुनर्जन्म के सिद्धान्त का ज्ञान न होने के कारण भी वह ईश्वर की यथार्थ उपासना व सत्कर्म न करके विनाश के मार्ग को अपना कर अपना व भावी सन्ततियों का भविष्य बिगाड़ रहे हैं जिससे उन्हें वर्तमान व भावी जीवन में भारी हानि होने की सम्भावना है।

वेद में गौ को माता व विश्व की नाभि कहकर सम्बोधित किया गया है। गौ के प्रति अश्रद्धा प्रकट करने वालों को दण्ड देने का विधान है। किसी भी प्राणी को अकारण दुःख देना मनुष्यता नहीं अपितु दानवता है। यह कृत्य निन्दनीय कृत्य है और दुःख है कि आज सारे संसार में गोहत्या व अन्य प्राणियों की हत्या के इस दुष्कृत्य को सबसे अधिक पढ़े-लिखे बुद्धिजीवी कहे जाने वाले लोग कर रहे हैं जो किताबी ज्ञान ही रखते हैं परन्तु यथार्थ ज्ञान व विद्या से शून्य हैं। इसका कारण उनका अज्ञान व आत्मा पर बुरे संस्कारों का होना ही सिद्ध होता है। गाय या किसी भी प्राणी का मांस खाना किसी भी मनुष्य के लिए किसी भी परिस्थिति में उचित नहीं है। ईश्वर ने सृष्टि में भोजन के लिए आवश्यकता से अधिक खाद्य पदार्थ बनाये हैं। गाय का दूध और दूध से बनने वाले अन्य पदार्थ एवं व्यंजन स्वाद में किसी भी पदार्थ व व्यंजन से कम स्वादिष्ट नहीं होते हैं। अतः गोमांस भक्षकों को जीवन के उद्देश्य, जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति के उपाय, उद्देश्य की पूर्ति में कैसा भोजन उचित व अपरिहार्य है, चिन्तन, विचार व ध्यान किस प्रकार से कैसा करना चाहिये और कैसे विचार मन में आने देने चाहिये और कैसे विचार नहीं आने देने चाहिये, इन सब प्रश्नों पर बुद्धिजीवी चाहे वह यूरोप के हों, भारत के हों या अन्य किसी भी देश के हों, सबको वेदों, वैदिक ग्रन्थों और महर्षि दयानन्द के साहित्य की सहायता से सही जीवनयापन की नीति व रीति का निर्णय करना चाहिये अन्यथा भावी जीवन में पछताने के स्थान पर कुछ न मिलेगा। एक क्षण भी व्यर्थ गंवाना अतीव हानिकारक है। जो व्यक्ति अपनी शारीरिक, मानसिक व आत्मिक उन्नति करना चाहता है, उसे आज और अभी गोमांस सहित सभी प्रकार का मांसाहार छोड़ देना चाहिये। गाय और अन्य सभी प्राणी जिनमें सभी पशु व पक्षी सम्मिलित हैं, उनके प्रति दया, करुणा व प्रेम की दृष्टि रखनी ही उचित है।

जब हम यूरोप आदि विश्व के अन्य देशों में गोमांस भक्षण पर विचार करते हैं तो हम पाते हैं कि कुछ शताब्दियों पहले वहां भोजन व अन्य सभी विषयों में अधिक ज्ञान नहीं था। उन्हें यह ज्ञान नहीं था कि क्या भक्ष्य है और क्या अभक्ष्य? वहां के धर्मग्रन्थों में मांसाहार के संकेत मिलते हैं जो धर्मग्रन्थ लिखे जाते समय व उससे पूर्व की स्थिति को प्रदर्शित करते हैं। ज्ञान व विवेक की कमी के कारण वहां मांसाहार हुआ करता था और वह किसी भी पशु में भेद नहीं करते थे। उन्होंने पालतू पशुओं गाय व बकरी आदि पशुओं से ही मांसाहार का आरम्भ सुदूर अतीत में किया। अविद्या व अज्ञान के कारण ही ऐसा हुआ करता है। आज तो आधुनिक चिकित्सा विज्ञान भी मांसाहार को उचित नहीं मानता। यदि किसी को उच्च रक्त चाप या हृदय रोग आदि है, तो चिकित्सक उसे मांसाहार व तले हुए पदार्थ खाने से मना करते हैं। बाल व युवावस्था में किया गया मांसाहार ही इन रोगों की उत्पत्ति में सहायक होता है। यदि हम पूर्णरूप से शाकाहारी जीवन व्यतीत करें, अपने विचारों को शुद्ध रखें तथा ईश्वर में आस्था रखते हुए प्राणायाम व पैदल चलने की आदत डालें तो रोग या तो हों ही न और हों भी तो कम से कम जैसा भारत में वैदिक काल में होता था। उन दिनों महाभारत काल में हमारे यहां 150 वर्ष से ऊपर की आयु के लोग

शेष पृष्ठ 8 पर....

thearyasamaj.org

* ओ३म् *

उसे हृदय सिंहासन में बिठाओ

मन्त्र

प्र नूनं जातवेदसमश्वं हिनोत वाजिनम्।
इदं नो बर्हिरासदे॥ ऋ० 10/188/1॥

अर्थ—हे विद्वानो! आप लोग (वाजिनम् अश्वम्) ज्ञान बल देने वाले सर्वत्र व्यापक (जातवेदम्) सब उत्पन्न पदार्थों में विद्यमान अथवा उन्हें जानता है, उसे (नूनम्) अवश्य ही (प्रहिनोत) प्राप्त करो। (नः) हमारा (इदम्) यह (बर्हिः) हृदय सिंहासन (आसदे) उसके बैठने के लिये सुसज्जित है।

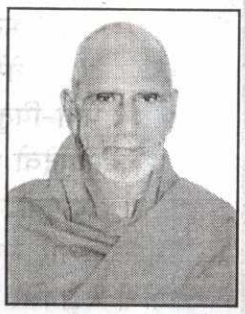

किसी शिल्प या मूर्ति को देखने पर मूर्तिकार का कौशल्य सामने दिखाई दे जाता है। ऐसे ही किसी ग्रन्थकर्त्ता के ग्रन्थ का दत्तचित्त होकर अध्ययन करें तो ऐसा विदित होने लगता है कि ग्रन्थ रचयिता मानो पुस्तक में प्रकट हो स्वयं उस विषय का ज्ञान करा रहा है। इसी भांति किसी सामाजिक नियम को भंग करने पर माता-पिता या गुरु-आचार्य की आकृति मानस पटल पर उभर जाती है मानो वे इस कार्य का निषेध कर रहे हों।

जिसने इस सृष्टि की रचना की है और इसे चला रहा है, यदि तनिक भी विचार या चिन्तन करें तो अनायास ही किसी अदृश्य सत्ता की ओर ध्यानाकर्षण हो जाता है। यदि किसी नदी, पर्वत, वन, उपवन, समुद्र तट पर शान्त हो उस दृश्य का अवलोकन किया जाये तो उस अद्भुत रचना को देख रचनाकार को साधुवाद देना पड़ता है। पत्ते-पत्ते की कतरन, पक्षियों का कलरव, पवन की सरसराहट, बिजली की चमक, समुद्र का गर्जन, नियम से सूर्य, चन्द्रमा का उदयास्त आदि सभी में किसी अदृश्य शक्ति का आभास होता है जो इन्हें चला रही है। वेद ने उसे जातवेदस् कहा है। जो प्रत्येक पदार्थ को जानती है और उसमें विराजमान हो रही है।

आज विज्ञान प्रकृति के एक-एक रहस्य का उद्घाटन करने में लगा है। नित्य नवीन जानकारी प्राप्त हो रही है परन्तु क्या उसे भी जानने का प्रयास किया गया जिसके जान लेने पर और किसी के जानने की इच्छा शेष नहीं रहती। वेद इसी ओर ध्यानाकर्षण करते हुये कह रहा है—**प्रनूनं जातवेदसमश्वं हिनोत वाजिनम्**। जो प्रत्येक वस्तु में व्याप्त हो रहा है और जिसकी सर्वत्र गति है, उसे अवश्य ही जानो। उपनिषद् भी सावधान कर रही है—

इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति न चेहेह्यवेदीन्महती विनष्टिः।
भूतेषु भूतेषु विचिन्त्य धीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति॥ (केन० 2.5)

—आचार्य बलदेव

वेदप्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

आर्यसमाज इसराना जिला पानीपत में 15.8.14 से 17.8.14 तक प्रसिद्ध भजनोपदेशक पंडित रामकुमार आर्य की भजन मण्डली द्वारा वेदप्रचार किया गया जिसमें श्री जोगीराम, रामचन्द्र आर्य, मा० सूरतसिंह, मा० वीरसिंह, राजेन्द्रसिंह, पं० सत्यनारायण पटवारी, जयपाल, जयभगवान, बिन्द्र आदि ने भाग लिया।

दिनांक 27.7.14 को जीन्द में आयोजित हरफूल जाट जुलानी वाले के 78वें बलिदान दिवस पर भी आर्यसमाज की तरफ से लगभग 30 व्यक्तियों ने हिस्सा लिया।

आर्यसमाज इसराना जिला पानीपत का चुनाव सम्पन्न

आर्यसमाज इसराना जिला पानीपत का चुनाव दिनांक 10.8.14 को गांव की चौपाल में यज्ञ-हवन के पश्चात् सम्पन्न हुआ जिसमें निम्न प्रकार पदाधिकारियों का चुनाव हुआ—

प्रधान-श्री सूरतसिंह आर्य, उपप्रधान-श्री रामचन्द्र आर्य, मंत्री-श्री जयपाल, उपमंत्री-कैप्टन जयकिशन, कोषाध्यक्ष-श्री मा० वीरसिंह, प्रचारमंत्री-श्री सत्यनारायण पटवारी।

—श्री रामचन्द्र आर्य, आर्यसमाज इसराना जिला पानीपत

पानीपत में वेदप्रचार की धूम

15 जून, 2014 को खरखौदा (सोनीपत) में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मंत्री मा० रामपाल आर्य ने एक विशाल जिला स्तरीय वेदप्रचार कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के यशस्वी प्रधान आचार्य विजयपाल जी ने की। स्वामी कर्मपाल व आचार्य विजयपाल जी ने ओ३म् ध्वज दिखाकर पूरे हरयाणा में वेदप्रचार के कार्यक्रम को बढ़ावा देने का संकल्प उपस्थित आर्यों को दिया। इसी अभियान के अन्तर्गत वेदप्रचार मण्डल, मुण्डलाना, बाबरपुर मण्डी में प्रचार किया। इस दौरान लोगों में बड़ा भारी उत्साह रहा। भारी संख्या में युवाओं के अतिरिक्त महिलाओं ने भी भाग लिया। इस अवसर पर सभा के भजनोपदेशक भाई महेन्द्र आर्य ने अपने भजनों द्वारा लोगों को नशा व अंधवश्वास से दूर रहने व आर्यसमाज अपनाने की प्रेरणा दी। उनके साथ आर्य बाल भारती विद्यालय के कार्यकर्त्ता रिंकू, अमित आर्य, युवा उपदेशक अशोक आर्य आट्टा आदि उपस्थित रहे। इस अवसर पर हरयाणा

पानीपत ने विशेष सक्रियता दिखाते हुए यहाँ 6 अगस्त 2014 से आरम्भ हुए कार्यक्रम के दौरान बड़ौली, हरिसिंहपुरा, बरसत, बराना, चन्दौली, पुण्डरी, बबैल, राजाखेड़ी, मतलौडा, गोशाला संघ द्वारा गोहत्या पर बनी फिल्म भी प्रोजेक्ट पर दिखाई गई विभिन्न गाँव में प्रचार की तस्वीर संलग्न है।

—प्राचार्य अभर्य आर्य, रोहतक

सत्संग का आयोजन

दिनांक 30.7.14 को प्रातः दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में ब्र० जगदीश कुमार आर्य ने सन्ध्या-हवन करवाया। उसके बाद महात्मा वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही ने आश्रम व वर्ण व्यवस्था पर सरल शब्दों में प्रकाश डाला तथा विद्यालय के अध्यापक कैलाशचन्द्र शास्त्री ने ब्रह्मचर्य की महिमा पर विचार रखते हुए स्वाध्याय करने का सुझाव दिया। अब तक 22 विद्यार्थी प्रवेश ले चुके हैं।

दिनांक 31.7.14 को प्रातः 9 बजे स्त्री आर्यसमाज में श्रावणी पर्व पर पधारे स्वामी श्रेयोनन्द यति (उत्तमनगर दिल्ली) ने ब्रह्मचारियों को समय का सदुपयोग तथा वेदों का स्वाध्याय करने पर प्रकाश डाला। विद्यालय के आचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी ने स्वामी जी का परिचय दिया तथा धन्यवाद दिया। इस अवसर पर ब्रह्मचारियों के अतिरिक्त वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही, जिला वेदप्रचार मण्डल हिसार के अध्यक्ष रामकुमार आर्य, दीपक आर्य, कैलाश शास्त्री, राजू आर्य उपस्थित थे।

—श्रीराम आर्य, दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार

जल अमूल्य निधि है, इसका सोच-समझकर प्रयोग करें, क्योंकि जल है तो कल है।

thearyasamaj.org

अन्ध श्रद्धा में लुट-पिट रहा मानव समाज

प्रेम, सहयोग, सहानुभूति, सत्यता, स्वच्छता, अहिंसा, अधिक संग्रह न करना, अलोभ, अक्रोध, संतोष, ज्ञान प्राप्ति हेतु अध्ययनशीलता आदि जीवन में धारण करके, मन की एकाग्रता के लिए एकान्त स्थान पर नित्य प्रभु जप करना ही धर्म है लेकिन अज्ञानी मानव बहुतायत में मठ, मन्दिर, आश्रम, गुरुद्वारा आदि में माथा टेकने, हज या तीर्थयात्रा करने को ही धर्म मान रहे हैं। विभिन्न पूजा-पाठों व गुरुदर्शनों से मनोकामना पूर्ति का भ्रम मन में पाले रहते हैं। मनोकामना तो नास्तिक लोगों की भी पूर्ण होती रहती हैं। दु:ख-सुख, राजा-रंक, आस्तिक-नास्तिक सबको बराबर आते हैं। यह सब कर्मानुसार है। यदि विभिन्न पूजा-पाठों, तीर्थयात्राओं से मनोकामना पूर्ण हों तो कर्मफल व्यवस्था ही बिगड़ जाए। सबको खिलाने वाले प्रभु को हम क्या खिला-पिला सकते हैं? झूठे भगवानों और देवताओं पर चढ़ावे चढाना अज्ञानता है तथा प्रकृति के अमूल्य पदार्थों को नष्ट करना है। ये विचार अन्ध श्रद्धा निवारण सत्संग में बोलते हुए प्रवचनकर्ता श्री भरतलाल शास्त्री ने कहे। सत्संग में सभी धर्माचार्यों की जांच करने, अश्लीलता पर रोक, शराबबन्दी करने, अंग्रेजी वैकल्पिक कर सभी मातृभाषाओं के साथ जोड़कर संस्कृत पढ़ाने, लड़कियों के नृत्यों पर रोक व गुरुकुल शिक्षा प्रणाली लागू करने के प्रस्ताव पारित किए गए।

सत्संग आर्य पारिवारिक सभा, वैदिक विश्व व आर्यसमाज पालिका कालोनी के तत्त्वावधान में न्यू राजेन्द्र कालोनी में आयोजित किया गया जिसमें सैकड़ों लोगों ने भाग लिया। सत्संग में श्री सतीश आर्य, शमशेर नहरा, राजेन्द्रसिंह सजीव ब्रह्मचारी, शक्तिदेव, प्राचार्य रामानन्द सांगवान, बिजेन्द्र आदि उपस्थित थे।

—महावीर 'धीर', 21/1227, प्रेमनगर, हैफेड रोड, रोहतक 9466565162

सुनो स्वरूपानन्द जी! आप लगाकर ध्यान

❑ पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार, भजनोपदेशक

जगद्गुरु दयानन्द थे, ईश्वर भक्त महान्।
देशभक्त धर्मात्मा, सत्यवादी इन्सान॥
सत्यवादी इन्सान, सदाचारी तपधारी।
वीर साहसी बली, महात्यागी उपकारी।
चरित्रवान् गुणवान्, वेद-प्रचारक नामी।
मानवता के पुंज, निराले थे वे स्वामी।

भूल गया था वेदपथ, यह सारा संसार।
पोंगापंथी धर्म के, थे तब ठेकेदार।
थे तब ठेकेदार, पाप का जोर यहाँ था।
पाखण्डियों का आर्यावर्त में शोर यहाँ था।
वेद-विरोधी लोग, यहाँ आदर पाते थे।
ईश्वरभक्त महान्, यहाँ धक्के खाते थे।

देवदूत दयानन्द ने, किया वेदप्रचार।
कांप उठे थे धूर्तजन, सुन ऋषि की हुंकार।
सुन ऋषि की हुंकार, नास्तिक खल दहलाए।
वैदिक पथ पर चलो, सभी ऋषि ने समझाए।
कुरान, पुराण, इंजील, झूठ की हैं गठरी।
इन से कभी न स्वर्ग, बनेगी दुनिया सगरी।

सुनो स्वरूपानन्द जी! आप लगाकर ध्यान।
वदों के पथ पर चलो, यदि चाहो कल्याण।
यदि चाहो कल्याण, पुराणों को तुम त्यागो।
निराकार जगदीश, मान लो, अब तो जागो।
जग का स्वामी एक, न आप अनेक बनाओ।
सच्चाई उर धार, जगत् में आदर पाओ।

ईश्वर का सुमरन करो, आप सुधारो भूल।
साईं पूजा का सुनो, जड़ा पूजा है मूल।
जड़ पूजा है मूल, राष्ट्र के पतन का कारण।
करो आप अवतारवाद का शीघ्र निवारण।
जड़ पूजा से हुई, लूट भारत की भारी।
घातक है अवतारवाद की, यह बीमारी।

जगद्गुरु दयानन्द के, मानो तुम उपकार।
सुख पाओगे संत जी! तजदो बुरे विचार।
तज दो बुरे विचार, महामानव बन जाओ।
आडम्बर दो त्याग, जगत् में नाम कमाओ।
याद रखो, संसार, आपका यश गाएगा।
नाम स्वरूपानन्द, सार्थक हो जाएगा।

संपर्क-आर्यसदन बहीन, जनपद पलवल (हरयाणा) मो० 9813845774

आर्यसमाज सैक्टर-1, रोहतक का चुनाव सम्पन्न

आर्यसमाज सैक्टर-1, रोहतक का चुनाव दिनांक 24.08.2014 को कर्णसिंह मोर प्रधान आर्यसमाज प्रेमनगर दुर्गा कालोनी रोहतक के अध्यक्षता में देवीलाल पार्क में सम्पन्न हुआ जिसमें प्रधान-श्री रघुवीरसिंह कादयान, उपप्रधान-कृष्णसिंह राठी, मंत्री-शमशेर सिंह, कोषाध्यक्ष-हवासिंह राठी को सर्वसम्मति से चुना गया। —कर्णसिंह मोर, प्रधान आर्यसमाज प्रेमनगर दुर्गा कालोनी, रोहतक

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये। —आचार्य बलदेव

॥ ओ३म्॥

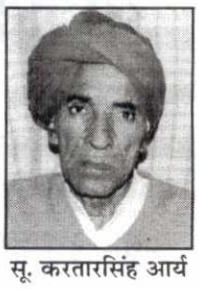

सू. करतारसिंह आर्य

मगन ईश्वर की भक्ति में अरे मन क्यों नहीं होता।
पड़ा आलस में मूरख रहेगा कब तलक सोता॥
जो इच्छा है तेरे कट जायें सारे मैल पापों के।
प्रभु के प्रेम जल में क्यों नहीं अपने को तू धोता॥
विषय और भोग में फँसकर, न कर बर्बाद जीवन को।
दमन कर चित्त की वृत्ति, लगा ले योग में गोता॥
धर्म ही एक ऐसा है, जो होगा अन्त में साथी।
न पत्नी काम आयेगी ना बेटा और कोई पोता॥

भटकता जां बंजा नाहक वृथा सुख के लिये '**सालिग**'।
तेरे हृदय के भीतर ही, बहे आनन्द का श्रोता॥

मात-पितृ उपकार-स्वामी केवलानन्द सरस्वती

मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव।
कुपुत्रो जायत क्वचिदपि कुमाता न भवति॥

भूलना प्यारे मगर, इस बात को मत भूलना।
कर्जा चढ़ा सिर पर तेरे, माँ-बाप को मत भूलना॥

मुखड़ा तुम्हारा देखने को, देवता पूजे कई।
पैदा हुए भारी खुशी, घर में मनाई भी गई।
छत पर चढ़ थाली बजी, इस बात को मत भूलना॥

लड्डू मँगाकर तभी, घर-घर बँटाए भी गये।
परिवार के आये सभी, पकवान भी खाये गये।
बजने लगी सहनाईयाँ, इस बात को मत भूलना॥

मल-मूत्र से गन्दे किये, माँ-बाप के कपड़े सभी।
धो-पोंछकर छाती लगाया, आराम न पाया कभी।
उस माँ की ममता को, कभी तुम भूलकर मत भूलना॥

माँ ने सिखाया बैठना, अंगुली पकड़ चलना तुम्हें।
बोलना तुमको सिखाया, खाना सिखाया फिर तुम्हें।
जीवन दिया माँ-बाप ने, इस बात को मत भूलना॥

दु:ख-दर्द से तुमको बचाया, हर मुसीबत में तुम्हें।
नौ मास तक बोझा उठाया, पेट में रखा तुम्हें।
खून का पानी किया, इस बात को मत भूलना॥

दूध तुमको वह पिलाती, लोरियाँ गाकर सुनाती।
रातभर गीले में रहकर, वह तुम्हें सूखे में सुलाती।
हृदय से प्यारा रखा, इस बात को मत भूलना॥

मिल जायेगा सब कुछ तुम्हें, माँ-बाप मिलने के नहीं।
दौलत तुम्हें मिल जायेगी, पर प्यार मिलने का नहीं।
कह नन्द-कश्यप भक्त श्रवण को कभी मत भूलना॥

पढ़-लिख हुये जब तुम बड़े, शादी करी माँ-बाप ने।
नौकर हुए अफसर बने, आँखें फिराई आपने।
भूल बैठे तुम सभी, कर्त्तव्य को मत भूलना॥

वचन दशरथ कैकेयी का, राम ने टाला नहीं।
दयानन्द ने वचन गुरु का, क्या कभी पाला नहीं।
माता-पिता-गुरु के वचन को, तू कभी मत भूलना॥

भेंटकर्त्ता : सूबेदार करतारसिंह आर्य,
सेवक आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

सभा का आयोजन

दिनांक 6.8.14 को सायं 6 बजे दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें ब्रह्मचारी सन्तोष ने आर्यसमाज के विकास व धर्म के महत्त्व पर प्रकाश डाला। महात्मा वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही ने शराबबन्दी में इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होने वाली बर्बादी का दर्दनाक चित्र खींचा। विद्यालय के अध्यापक कैलाश कुमार शास्त्री ने विद्यार्थियों को कर्त्तव्य पालन व चरित्र निर्माण की शिक्षा पर बल दिया और इस अवसर पर ब्रह्मचारी जगदीश ने भजन के माध्यम से ईश्वर को कैसे जाना जाये यह संदेश दिया।

—ब्र० सत्यप्रकाश आर्य, हिसार

thearyasamaj.org

ऋषि के कतिपय अन्य अमृतमय उपदेश

1. वीर्यरक्षा-वीर्यरक्षा करने में आनन्द और नाश करने में दु:ख है। देखो! जिसके शरीर में वीर्य सुरक्षित रहता है तब उसको आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम बढ़के बहुत सुख की प्राप्ति होती है। वीर्यरक्षा की यही रीति है कि विषयों की कथा, विषयी लोगों का संग, विषयों का ध्यान, स्त्री-दर्शन, एकान्त सेवन, सम्भाषण और स्पर्श आदि कर्म से ब्रह्मचारी लोग सदा पृथक् रहकर उत्तम शिक्षा और पूर्ण विद्या को प्राप्त करें।

जो तुम सुशिक्षा और विद्या के ग्रहण तथा वीर्य की रक्षा करने में इस समय चूकोगे तो पुन: इस जन्म में तुमको यह अमूल्य समय प्राप्त न होगा। -स०प्र०

2. भारत की उन्नति का उपाय-एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य की प्राप्ति ही भारत की पूर्णोन्नति में साधक है। कड़े तथा खरे उपदेशों से जाति को जगाकर, कुरीतियों और कुनीतियों को नष्ट करना ही मेरे खण्डन का एकमात्र उद्देश्य है। इसीलिए मैं जाति के हित के लिए अनेक प्रकार के कष्ट, गालियाँ और विषपान भी सह लेता हूँ।

-उपदेशमंजरी

3. कौन देश सौभाग्यशाली है-जिस देश में यथायोग्य ब्रह्मचर्य, विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार होता है, वही देश सौभाग्यशाली है।

-सत्यार्थप्रकाश

4. संस्कृत भाषा का महत्त्व-ईश्वर में जैसा अनन्त आनन्द है उसी प्रकार संस्कृत भाषा अनन्तानन्द है। कहिये! इस भाषा के सदृश मृदु, मधुर और व्यापक सर्वभाषाओं की जननी अन्य कौन-सी भाषा है?

-उपदेशमंजरी

5. भारतवर्ष की अवनति का कारण-जब तक सब ऋषि, मुनि, राजा, महाराजा आर्य लोग ब्रह्मचर्य पूर्वक विद्या पढ़कर ही स्वयम्वर विवाह किया करते थे, तब तक इस देश की सदा उन्नति होती थी। जब से ब्रह्मचर्य से विद्या का न पढ़ना, बाल्यावस्था में ही पराधीन अर्थात् माता-पिता के आधीन विवाह होने लगा तब से क्रमश: आर्यावर्त देश की हानि होती चली आ रही है। -उपदेशमंजरी

6. पितर और पितृयज्ञ-सुनीति, धर्म, सच्चाई और सच्चरित्रता आदि गुणों से अत्यन्त सहिष्णु महात्मा हुए हैं। उन्हीं को अपने तपोबल के प्रभाव से वसु, रुद्र और आदित्य आदि की पदवियाँ मिला करती थीं। ऐसे ऋषि ही सच्चे कहलाते थे और उनका आदर सत्कार ही पितृयज्ञ कहलाता था।

-उपदेशमंजरी

7. कौन-सा धर्म मानने योग्य है-जिस धर्म को आप्त अर्थात् सत्यमानी, सत्यवादी, सत्यकारी, परोपकारक, पक्षपातरहित विद्वान् मानते हैं, वही सबको मन्तव्य है और जिसको नहीं मानते वह अमन्तव्य होने से प्रमाण के योग्य नहीं हैं। -सत्यार्थप्रकाश

8. मनुष्य किसे कहते हैं-मनुष्य उसे कहना चाहिये जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दु:ख, हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुण रहित क्यों न हो, उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सनाथ, महाबलवान् और गुणवान् भी हो, तथापि उसका नाश, अवनति, अप्रियाचरण सदा किया करे। अर्थात् जहाँ तक हो सके अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सदा किया करे। इस काम में चाहे उसको कितना भी दारुण दु:ख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले चले जावे, परन्तु इस मनुष्यपन रूप धर्म से पृथक् कभी न होवे। -सत्यार्थप्रकाश

9. राजा का स्वरूप-राजा उसी को कहना चाहिए जो शुभ गुण-कर्म-स्वभाव से प्रकाशमान, पक्षपातरहित, न्याय, धर्म की सेवा करे तथा प्रजाओं में पितृवत् वर्ते और उसको पुत्रवत् मान के उनकी उन्नति और सुख बढ़ाने में सदा यत्न किया करे।

-सत्यार्थप्रकाश

10. प्रजा का स्वरूप-प्रजा उस को कहते हैं, जो पवित्र गुण, कर्म, स्वभाव को धारण करके पक्षपातरहित, न्याय, धर्म के सेवन से राजा और अपनी सदा उन्नति ही चाहती है।

-सत्यार्थप्रकाश

11. वीर्यहीन मनुष्य शीघ्र ही नष्ट हो जाता है-जिसके शरीर में वीर्य नहीं होता, वह नपुंसक, महा-कुलक्षणी और जिसको प्रमेह आदि रोग होता है, वह दुर्बल, निस्तेज, निर्बुद्धि, उत्साह, धैर्य, बल, पराक्रम आदि गुणों से रहित होकर शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। -स०प्र०, 2 समु०

12. कामवासना जीतने का उपाय-कामवासना जीतने का यह उपाय है कि एकान्त स्थान में रहे, नाच आदि कभी न देखे, अनुचित स्वरूप का देखना, अनुचित शब्द का सुनना और अनुचित वस्तुओं का स्मरण करना परित्याग कर देवे, स्त्रियों की ओर न निहारे, नियमपूर्वक जीवन व्यतीत करे। इन उपायों से कामवासना मन्द हो जाती है, मनुष्य जितना भी वासना की तृप्ति का यत्न करता है, वह शान्त न होकर, उतनी अधिक बढ़ती चली जाती है, इसलिए विषय वासना का चिन्तन भी न करे। जितेन्द्रिय बनने के अभिलाषी को भगवान् के पवित्र प्रणव (ओ३म्) नाम का जप करते रहना चाहिए।

-श्रीम०द०

13. वेश्या गमन से हानियाँ (युवकों को उपदेश)-सौम्य युवको! वैसे तो व्यसन सभी बुरे हैं। परन्तु वेश्या सबसे अधिक नाशकारिणी है। इस व्यसन से सुरापान की भी बान सहज में पड़ जाती है। सभ्यवेश, सभ्यभाषा, सभ्याचार आदि सभी गुण नष्ट हो जाते हैं। कुलाचार पर कठोर कुठाराघात हो जाता है। रात-दिन राग-रंग मग्न रहने से सद्व्यवहार और सद्बुद्धि का नाश होने लगता है। ऐसा व्यसनी धर्म, कर्म से सदा दूर भागता है। वारांगना अपने वशीभूत जन के मन को कृत्रिम प्रेम से, बनावटी बातों से और हाव-भाव से सदा कामोत्तेजित ही बनाए रखती है, जिससे व्यसनी अल्पकाल में ही निस्तेज, निर्वीर्य और जीर्ण, शीर्ण शरीर वाला हो जाता है। जब स्वार्थ सिद्ध नहीं होता तो वह बात तक भी नहीं पूछती। -श्रीम०प्र०

14. अपने शरीर को बलवान बनाओ-खान-पान की तरह व्यायाम भी नित्य करना चाहिए। बलवान मनुष्य सदा सुखी और प्रसन्न रहता है। निर्बल मनुष्य का जीवन साररहित, रोगों का घर और नरकधाम बना रहता है।

-श्रीम०प्र०

15. छोटी आयु की शादी से हानियाँ-पुत्र-पुत्रियों की छोटी आयु में शादी करना बहुत बुरा है। सन्तान के परित्राण के लिए इस कुरीति को अपने में से सदा के लिए निकाल दो। जैसे कच्चे खेत को काट लेने से अन्न नष्ट हो जाता है, कच्चे फल और ईख में मिठास नहीं होती, ठीक उसी प्रकार छोटी आयु में जो सन्तान का विवाह कर देते हैं, उनका वंश भी बिगड़ जाता है। सन्तान में सुख और उन्नति का सदा अभाव ही बना रहता है।

-श्रीम०प्र०

16. द्वेषी का द्वेष करने से दूर नहीं होता-अपमानकर्त्ता का अपमान करने से उसका सुधार नहीं होता, किन्तु सम्मान देने से सुधार हो जाता है। जैसे आग में आग डालने से वह शान्त नहीं होती, ऐसे ही द्वेषी की द्वेष बुद्धि उसके साथ द्वेष करने से दूर नहीं हो सकती। जैसे अग्नि को शान्त करने का साधन जल है। उसी प्रकार द्वेष को मिटाने का साधन भी शान्ति धारण करना है।

-श्रीम०प्र०

17. स्त्री-सत्कार-हे मनुष्यो! जो प्रभात वेला के समान सुप्रकाश, सुरूपवती, सूर्य-किरणों के तुल्य घर के कामों की व्यवस्था चलाने वाली, शूरवीर के समान परिश्रम से न थकने वाली स्त्रियाँ हों, उनका निरन्तर सत्कार कर, उन्हें सदा सौभाग्य युक्त करते रहो। -ऋ०भा० 6.64.3

18. गृहाश्रमी का कर्त्तव्य-गृहस्थों को चाहिए कि ईश्वर के अनुग्रह से प्रशंसनीय बुद्धि युक्त मंगलकारी गृहाश्रमी बनकर इस प्रकार का प्रयत्न करें कि जिसे तीनों अर्थात् भूत, भविष्यत् और वर्तमान काल में अत्यन्त सुखी हों। -य०भा० 8.6

19. गृहस्थाश्रम को कौन धारण कर सकता है-इस बात का निश्चय है कि ब्रह्मचर्य, उत्तम शिक्षा, विद्या शरीर और आत्मा का बल, आरोग्य, पुरुषार्थ, सज्जनों का संग, आलस्य का त्याग, यम, नियम और उत्तम सहायक के बिना किसी भी मनुष्य से गृहस्थाश्रम धारा नहीं जा सकता। -य०भा० 8.31

20. मनुष्य जीवन में कुछ भी दुर्लभ नहीं-मनुष्य शरीर पाकर उत्साह, पुरुषार्थ, सत्पुरुषों का संग और योगाभ्यास का अनुष्ठान करते हुए मनुष्य को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि तथा शरीर, आत्मा और समाज की उन्नति करना कुछ भी दुर्लभ नहीं है।

21. राजा को क्यों देना चाहिये-जो राजपुरुष हम लोगों से कर लेते हैं, वे हमारी निरन्तर रक्षा करें। नहीं तो न लें और हम भी उनका कर न देवें। इस कारण प्रजा की रक्षा और दुष्टों के साथ युद्ध करने के लिए ही राजा को कर देना चाहिए। अन्य किसी प्रयोजन के लिए नहीं।

-य०भा० 9.17

—भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य,
B-2, 92/7B, शालीमार नगर,
जिला होशियारपुर (पंजाब)

thearyasamaj.org

हृष्ट-पुष्ट शरीर से ही उत्तम शिक्षा संभव

❑ डॉ० अशोक आर्य, 107, शिप्रा अपार्टमेंट, कौशाम्बी, जिला गाजियाबाद

आज की शिक्षा की एक जो अन्य समस्या है, वह है कि हमारी इन्द्रियों के साथ ही साथ हमारे मन तथा हमारी आत्मा की शक्ति का विकास ही पर्याप्त नहीं है, इसके साथ शरीर के सब अंगों का भी हृष्ट-पुष्ट होना आवश्यक है। इससे हम अच्छी शिक्षा पाने में सफल होते हैं। इस बात पर ऋग्वेद अध्याय 1, सूक्त 89 के मन्त्र संख्या 8 में इस प्रकार विचार किया गया है—

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः॥

उत्तम शिक्षा प्राप्ति के लिए उपदेश करते हुए इस मन्त्र में ज्ञानियों को यजत्र देवों के नाम से संबोधित किया गया है। इस प्रकार यह मन्त्र उपदेश करते हुए कह रहा है कि उच्च व उत्तम शिक्षा पाने का साधन ज्ञानी व उच्च ज्ञान से युक्त लोगों का सत्संग आवश्यक है। ज्ञानी लोगों से हमें उत्तम मार्गदर्शन होता है, वह हमें सन्मार्ग दिखाते ही नहीं, अपितु सन्मार्ग पर ले जाने के लिए हमारा हाथ पकड़कर हमें उत्तम मार्ग पर चलने के लिए अपने साथ ले जाते हैं। यह ज्ञानी लोग यजत्र रूपी देव माने गए हैं। मन्त्र कह रहा है कि वास्तव में सुपथगामी तथा सुपथ के पथ-प्रदर्शक ज्ञानी ही होते हैं, यजत्र ही होते हैं, जो हमें भी सुपथ पर अपने साथ ले जाते हैं।

इस कारण ही यह यज्ञीय कहे जाते हैं। परोपकार का नाम ही यज्ञ है। परोपकार स्वरूप यह हमें अपने साथ ले जाते हैं। इस कारण ही वेद का यह मन्त्र इन्हें यजत्र मानता है।

इस प्रकार यजत्र प्रकार के लोगों का साथ बनाए रखने के लिए इस मन्त्र के माध्यम से हम परमपिता से प्रार्थना करते हैं कि हम कानों से उत्तम, सुखकारी, कल्याण करने वाली ध्वनियों को सुनें। शरीर का दूसरा मुख्य अंग आँखें होती हैं। इस मन्त्र में आंखों की पवित्रता, शुद्धता तथा सुखकारी कल्याणकारी पदार्थों को ही देखने की प्रार्थना की गई है। मन्त्र न तो बुरा देखने का उपदेश करता है तथा न ही बुरा सुनने के लिए उपदेश करता है। मन्त्र में तो यह ही उपदेश है कि हम सदा कल्याणकारी दृश्य ही देखें तथा ऐसे वचनों को सुनें, जिससे सबका कल्याण हो। जब हम सब के कल्याण की भावना रखते हैं तो हमारा कल्याण तो स्वयं ही हो जाता है। मन्त्र की यह भावना ही तो है कि हम उत्तम शिक्षा पाने के लिए कल्याणकारी शब्दों को ही सुनें तथा कल्याणकारी दृश्यों को ही देखें किन्तु आज की शिक्षा की यह सबसे बड़ी समस्या बन गई है कि इसमें कल्याण के लिए स्थान ही नहीं रहा। क्लर्क बनाने वाली यह शिक्षा स्वार्थ का आवरण ओढ़े है। दूसरे को तो सुखी देखने का सन्देश ही नहीं देती। हाँ, दूसरे का अहित करने का मार्ग अवश्य देती है।

मन्त्र कान व आंख से हितकारक सुनने व देखने की प्रार्थना करते हुए आगे चलकर एक बड़ा ही सुन्दर उपदेश दे रहा है। मन्त्र कह रहा है कि उत्तम शिक्षा की समस्याएँ दूर करने के लिए हम इसके साथ ही साथ प्रभु से यह भी माँगते हैं कि जब उत्तम काम करते हुए हमारा शरीर के सब अंग बलवान हो जावें, दृढ़ हो जावें, कठोर हो जावें तो इन अंगों से सम्पन्न अपने शरीर के साथ हम सदा उस प्रभु की स्तुति करते हुए सब विद्वानों के हितकारक व दीर्घायु की प्रार्थना करें ताकि वह लम्बे काल तक इस संसार में रहते हुए हमारा मार्गदर्शन करते रहें तथा हमें सन्मार्ग पर ले चलें।

शान्तियज्ञ पर वेदोपदेश

दिनांक 3 अगस्त 2014 को ग्राम मदीना जिला रोहतक में बृहद् यज्ञ सम्पन्न हुआ। आर्यजगत् के वैदिक विद्वान् आचार्य वेदमित्र जी द्वारा श्रद्धा से यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ में अत्यधिक आर्य स्त्री-पुरुष सम्मिलित हुए। श्री आचार्य जी ने कहा कि योरोप में बाह्य धन-वैभव से आकर्षण है। भारत में अब भी आत्मा से जुड़ाव है। इसी कारण अन्तिम वेद उपदेश श्रवण का धार्मिक अनुष्ठान यहाँ होता है। वेद भगवान का मानव को विशिष्ट उपदेश **'भस्मान्तं शरीरम्'** यह शरीर तो भस्म होने वाला है लेकिन आत्मा कर्म फलानुसार पुनः जन्म प्राप्त कर लेती है।

श्रीमती ओमपति एक कर्त्तव्यनिष्ठ व धर्म व समाज को समर्पित अध्यापिका थी। कार्यक्रम के उपरान्त सुन्दर जलपान की व्यवस्था की गई। इसी दिन दयानन्दमठ रोहतक में मासिक सत्संग में भी आचार्य वेदमित्र जी का सारगर्भित व्याख्यान ब्रह्मचर्य विषय पर हुआ।

आजमाएं कुछ घरेलू नुस्खे

- कांच या कंकर खाने में आने पर ईसबगोल भूसी गरम दूध के साथ तीन समय सेवन करें।
- घाव न पके, तो गरम मलाई (जितना सहन कर सकें) बांधें।
- तुतलापन दूर करने के लिए रात को सोने से पांच मिनट पूर्व दो ग्राम भुनी फिटकरी मुंह में रखें।
- बच्चों का पेट दर्द होने पर अदरक का रस, पांच ग्राम तुलसी पत्र घोटकर, औटाकर बच्चों को तीन बार पिलायें।
- आमाशय का दर्द तुलसी पत्र को चाय की तरह औटाकर सुबह-शाम लेना लाभदायक है।
- शराब ज्यादा पी ली हो तो छह मात्रा फिटकरी को पानी/दूध में मिलाकर पिला दें या दो सेबों का रस पिला दें।
- अरहर के पत्तों का रस पिलाने से अफीम का नशा हटता है।
- आधी छटांक अरहर दाल पानी में उबाल कर उसका पानी पिलाने से भांग का नशा कम हो जाता है।
- केला हजम करने के लिए दो छोटी इलायची काफी होती है।
- आम ज्यादा खा लिये हों तो हजम करने के लिए थोड़ा-सा नमक सेवन करें।
- मुंह से बदबू आने पर मोटे अनार का छिलका पानी में उबालकर कुल्ले करें।
- हिचकी आने पर पोदीने के पत्ते या नींबू चूस लें।
- वजन घटाने हेतु गरम जल में शहद व नींबू मिलाकर सेवन करें।
- कान/दांत दर्द, खांस व अपचन में जीरा व हींग 1/1-2 मात्रा में सेवन करें।
- यदि जख्मों पर कीड़े हों तो उनका नाश करने के हींग पाउडर बुरक दें।
- दाढ दर्द के लिए हींग रूई के फाहे में लपेट कर दर्द की जगह रखें।
- शीत ज्वर में ककड़ी खाकर छाछ सेवन करें। शराब की बेहोशी ककड़ी सेवन करायें।
- खड़े-खड़े पानी पीने से घुटनों में दर्द की बीमारी होती है इसलिए खाना पीना बैठकर करना चाहिए।
- नक्सीर आने पर तुरन्त नाक में देसी घी लगाना चाहिए। नाक से खून आना बन्द हो जाता है।
- कद बढ़ाने के लिए अश्वगन्धा व मिश्री बराबर मात्रा में चूरन बनाकर एक चम्मच भोजन के बाद लें।
- बाल गिरने लगें तो 100 नारियल तेल में 10 ग्राम देशी कपूर मिलाकर जड़ों में लगायें।
- आधा सर दर्द होने पर दर्द होने वाली साइड की नाक में 2-3 बार सरसों का तैल जोर से सूंघ लें।
- जुकाम होने पर सुहागे का फूला एक चम्मच गर्म पानी में घोलकर पी लें, 15 मिनट में जुकाम गायब।
- चेहरे को सुन्दर बनाने के लिए एक चम्मच दही में 2 बूंद शहद मिलाकर लगायें, 10 मिनट बाद धो लें। इसी नुस्खे को पैरों की बिवाइयों में प्रयोग कर सकते हैं, लाभ होगा। **क्रमशः**

स्वामी ब्रह्मानन्द जी को मातृशोक

दिनांक 21.8.2014 को श्रद्धेय स्वामी ब्रह्मानन्द जी (सभा-अन्तरंग सदस्य) की माता जी श्रीमती रामकौर का काफी समय से अस्वस्थ होने के कारण 55 वर्ष की आयु में निधन हो गया। दुःखद समाचार सुनकर परिवार में शोक की लहर फैल गई। वह अपने पीछे एक पुत्री तथा दो पुत्र छोड़ गई हैं। श्रीमती रामकौर बहुत ही सौम्य व धार्मिक स्वभाव की महिला थी। उन्होंने अपने बच्चों को वैदिक सिद्धान्तों पर चलने के लिए प्रेरित किया और एक पुत्र को समाज के कार्यों के लिए समर्पित कर दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा इनके निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि माता जी की आत्मा को शान्ति तथा शोकाकुल परिवार को दुःख सहन करने की शक्ति दे। **—सभामन्त्री**

thearyasamaj.org

आर्य-संसार

पारिवारिक यज्ञों में वेदप्रचार मण्डल हिसार द्वारा वेदप्रचार का आयोजन किया गया

वेदप्रचार मण्डल हिसार के प्रधान श्री रामकुंवार द्वारा निम्न परिवारों में वेदप्रचार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में वेदप्रचार मण्डल के संरक्षक श्री वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही व मण्डल के बौद्धिक अध्यक्ष आचार्य डॉ. प्रमोद व सत्यप्रकाश मित्तल का विशेष योगदान रहा। उपरोक्त विद्वानों ने यज्ञ का महत्त्व, आर्यसमाज का देश की आजादी में योगदान तथा महर्षि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला।

23.4.2014 को श्री राजकुमार जी आर्य, न्यू ऋषिनगर हिसार के घर यज्ञ किया। 12.5.14 को अशोक कुमार आर्य, आर्यनगर हिसार के घर यज्ञ किया। 6.7.14 को श्री रमेश कुमार अग्रवाल, हाउसिंग बोर्ड, नई अनाजमण्डी हिसार के घर यज्ञ किया। 8.7.14 को श्री सत्यवीर आर्य लुदास के घर यज्ञ किया। 10.7.14 को सुरेन्द्र कुमार जी कक्कड़, हाउसिंग बोर्ड के घर यज्ञ किया। 19.7.14 को श्री नरेश कुमार कक्कड़ जवाहर नगर हिसार के घर यज्ञ किया। 19.7.14 को ही श्री पवन कुमार सैक्टर-13 हिसार के घर यज्ञ किया। 20.7.14 को सत्यवीर आर्य, हाउसिंग बोर्ड नई कालोनी के घर यज्ञ किया। 31.7.14 को एस.आई. दयानन्द, न्यू ऋषिनगर हिसार के घर यज्ञ किया। 3.8.14 को डॉ. विकास आर्य, उकलाना मण्डी हिसार के घर यज्ञ किया। 6.8.14 को भगवान दास बिश्नोई जवाहर नगर हिसार के घर यज्ञ किया। 10.8.14 को श्री राजेन्द्र कुमार आजाद नगर के घर यज्ञ किया। श्रावणी पर्व पर आर्य निवास नलवा में 10.8.14 को यज्ञ किया। 16.8.14 को कैलाश कुमार शास्त्री के निवास स्थान दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय के घर यज्ञ किया। 17.8.14 को वेदकथा की समाप्ति पर आर्यसमाज मन्दिर हिसार में स्वामी सुमेधानन्द जी (सांसद) का सम्मान किया गया जिसमें वेदप्रचार मण्डल का विशेष सहयोग रहा। 18.8.14 को चौधरीवास गांव में श्री राजेश कुमार बिश्नोई की ढाणी में यज्ञ किया गया। सभी जगह स्थानीय नर-नारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

—कर्नल ओमप्रकाश आर्य, मन्त्री
वेदप्रचार मण्डल हिसार

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय में स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया

15 अगस्त 2014 को दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में 68वाँ स्वतन्त्रता दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। श्री प्रमोद लाम्बा ने ध्वजारोहण किया। वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही संरक्षक वेदप्रचार मण्डल की अध्यक्षता में एक सभा हुई। ब्र० दीपक कुमार ने राष्ट्रभक्ति गीत सुनाया। लाम्बा साहब व स्नेही जी ने पर्व का महत्त्व व देश की आजादी पर आर्यसमाज के योगदान पर विचार रखे। वैदिक विद्वान् डॉ. प्रमोद आचार्य प्रमुख वक्ता थे। उन्होंने क्रान्तिकारियों के जीवन पर प्रकाश डाला तथा ब्रह्मचारियों को देशभक्ति का पाठ पढ़ाते हुए कहा कि देश की आजादी की धरोहर को सुरक्षित रखना नवयुवकों का काम है। श्री कैलाश कुमार शास्त्री ने मंच का संचालन करते हुए देश पर बलिदान होने वाले शहीदों को श्रद्धाञ्जलि दी। इस अवसर पर सुभाष आर्य हिसार, दिनेश वर्मा गाजियाबाद आदि अन्य महानुभाव उपस्थित थे।

—ब्र० अमित आर्य, द.ब्रा. म., हिसार

शोक-समाचार

दिनांक 2.8.14 को स्वर्गीय सूरजभान बालावास (हिसार) निवासी की धर्मपत्नी श्रीमती माया देवी का हृदय गति रुकने से रविन्द्रा अस्पताल हिसार में 67 वर्ष की आयु में निधन हो गया। दु:खद समाचार सुनकर परिवार में शोक की लहर फैल गई। वह अपने पीछे एक पुत्री तथा पाँच पुत्र, सब बच्चे शादीशुदा छोड़ गई। माया देवी ने क्रान्तिकारियों के साथ शराबबन्दी में बढ़-चढ़कर भाग लिया। उन्होंने बहनों से पर्दा हटवाया। वह बहुत निडर महिला थी। महात्मा वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही ने श्रद्धांजलि देते हुए ईश्वर से प्रार्थना की कि उनकी आत्मा को शान्ति तथा शोकाकुल परिवार को दु:ख सहन करने की शक्ति दे।

—भागचन्द आर्य, बालावास (हिसार)

सम्मान समारोह का आयोजन

झज्जर, 16 अगस्त। वैदिक सत्संग मण्डल झज्जर के अध्यक्ष पं० रमेशचन्द्र कौशिक को समाजसेवा, समाज-सुधार, यज्ञ-भजन प्रवचन द्वारा कन्या भ्रूणहत्या के विरुद्ध प्रचार करने एवं बेटी बचाओ अभियान को मण्डल द्वारा चलाए जाने पर स्वतन्त्रता दिवस पर सम्मानित करने पर वैदिक सत्संग मण्डल के सभी सदस्यों ने हर्ष व्यक्त किया है और यह सम्मान प्राप्त करने पर मण्डल के सदस्यों व सहयोगी सदस्यों को प्रेरणा प्राप्त हुई है और बेटी बचाओ अभियान को और तेजी से चलाने के लिए उत्साह पैदा हुआ है।

मण्डल के सभी सदस्यों ने जिला उपायुक्त श्री चन्द्रशेखर का मण्डल अध्यक्ष पं० रमेशचन्द्र कौशिक को सम्मानित करने के लिए आभार व्यक्त किया है। जिनमें सूबेदार भरतसिंह, पं० जयभगवान आर्य, ब्रह्मचारी सुभाष आर्य, राव रतिराम, प्राध्यापक द्वारका प्रसाद, डॉ. नन्दकिशोर सरदाना, कृष्णकुमार शास्त्री, ओमप्रकाश व राजेन्द्र यादव, श्रीमती बबली पार्षद, श्रीमती उर्मिला रंगा पार्षद, भारत स्वाभिमान के योगाचार्य प्रवीन कुमार, नवीन कुमार, रामनिवास व इन्द्रजीत, मन्जू सैनी पत्रकार शहर के अन्य गणमान्य व मौजिज आदमी थे।

—सुभाष आर्य, प्रेस प्रवक्ता,
वैदिक सत्संग मडल, झज्जर

'स्वराज्य' को 'सुराज' भी बनाया.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

बात की नितान्त आवश्यकता है कि सच्चे अर्थ में लोगों को धर्म की शिक्षा दी जाय। ज्यों-ज्यों हम धर्म की अपेक्षा करते जायेंगे त्यों-त्यों राष्ट्र तथा समाज का अहित होगा।''

'स्वराज्य' के सम्बन्ध में, पूज्य महात्मा गांधी के नीचे लिखे शब्द कितने महत्त्वपूर्ण हैं। वे कहते हैं—

''स्वराज्य लेने का पाठ तो लिया पर उसे संभालने का पाठ नहीं सीखा। हमारी राज-सत्ता ब्रिटिश की तरह बन्दूक के जोर से नहीं टिक सकेगी। अनेक त्याग और तपों के बाद कांग्रेस ने प्रजा का विश्वास प्राप्त कर लिया है, परन्तु यदि कांग्रेस वाले प्रजा को दगा देंगे और सेवा करने के बदले मालिक बन जायेंगे तो मैं कदाचित् जीवित रहूं या नहीं, पर इतने वर्षों के अनुभव के आधार पर आगाह करने की हिम्मत करता हूँ कि देश में बगावत होगी।''

विधानों (कानूनों) का प्रभाव बाहरी होता है, उससे हृदय परिवर्तन नहीं हो पाता। यही कारण है कि इतने अधिक कानून बन जाने पर भी अपराध बढ़ते ही चले जा रहे हैं। महाकवि गोल्ड स्मिथ ने ठीक कहा है—Laws grind the poors and richman rule the law. अर्थात् कानून गरीबों को कुचल देता है और अमीर आदमी उन पर काबू करते हैं। आज सबसे अधिक आवश्यकता धर्मानुष्ठान की है। धर्म के मौलिक सिद्धान्तों को आचरण में लाने से ही कल्याण होगा। इसीलिए आचार को परमधर्म कहा है। सदाचार से ही वास्तविक 'मानवता' का उदय होता है, मानवता ही कल्याणकारिणी है। मानव कौन?

स्वाध्याय सत्संग सदाचारिता में रत,
शुचिता सरलता से जीवन बिताता है।
मन वाणी करणी में समता का स्रोत बहे,
हिंसाहीन भावना की भव्यता दिखता है।
तप-त्याग-शीलता का सबल-संहारा लेकर,
दीन-दुखियों के शोक संकट मिटाता है।
जिसके आचार में विचार में विमलता है,
वही कर्मवीर मान्य 'मानव' कहलाता है।

धार्मिक सिद्धान्तों में क्रिया में लाना ही आचार-आचरण, चरित्र नैतिकता या 'मौरेलिटी' है। हमारे शास्त्रों में तो आचार को 'परमधर्म' माना ही है।

(ऋषि स्मृति प्रकाश से साभार)

thearyasamaj.org

गोरक्षा राष्ट्र-रक्षा व गोहत्या.... पृष्ठ 2 का शेष.....

स्वस्थ ही नहीं रहते थे अपितु युद्धभूमि में पराक्रम भी दिखाते थे। किसी भी चीज का संस्कार पड़ जाने पर उसे छोड़ने में कठिनाई होती है। इसके लिए उस विषय का संशय रहित निभ्रान्त ज्ञान होने के साथ दृढ़ इच्छाशक्ति का होना अति आवश्यक है। ऐसा होने पर ही संस्कार दोष छूटना सम्भव होता है। अपनी संगति को भी सुधारना चाहिये। बुरे विचारों वाले व्यक्तियों, दूषित व अभक्ष्य पदार्थों का भोजन करने वाले व्यक्तियों की संगति नहीं करनी चाहिये। यदि करेंगे तो यह दोष छूटना अति दुष्कर है।

महर्षि दयानन्द ने 'गोकरूणानिधि' नामक एक लघु पुस्तिका लिखी है जो गागर में सागर के समान है। प्रत्येक व्यक्ति को यह पुस्तक बार-बार और अवश्य पढ़नी चाहिये। इस पुस्तक में महर्षि दयानन्द ने गणित से गणना करके सिद्ध किया है कि एक गाय की एक पीढ़ी से एक समय में दूध व अन्न से 4,10,440 चार लाख दस हजार चार सौ चालीस लोगों के एक बार का भोजन होता है। हमने अपनी ओर से कुछ गणना की तो पाया कि एक स्वस्थ मनुष्य के लिए एक गाय की एक पीढ़ी से प्राप्त होने वाला भोजन 562 वर्षों के लिए पर्याप्त है जबकि उसकी आयु तो 60 से 90 वर्ष की ही होती है। (गणना = 4,10,440/2/365 = 562.25 वर्ष)। महर्शि दयानन्द द्वारा की गई यह अनुसंधान पूर्ण वैज्ञानिक गणना सम्भवतः इतिहास में इससे पूर्व किसी अन्य पुरुष ने नहीं की। वह इस विवरण को देकर आगे लिखते है कि ''अब छह गाय की पीढ़ी-पर-पीढ़ियों का हिसाब लगाकर देखा जावे तो असंख्य मनुष्यों का पालन हो सकता है और इसके मांस से अनुमान है कि केवल अस्सी मांसाहारी मनुष्य एक बार तृप्त हो सकते हैं। देखो! तुच्छ लाभ के लिए लाखों प्राणियों को मार असंख्य मनुष्यों की हानि करना महापाप क्यो नहीं?'' इस विवरण के बाद महर्षि दयानन्द ने भैंस, ऊंटनी तथा बकरी से मिलने वाले दूध आदि पदार्थों का उल्लेख कर उससे मनुष्यों को होने वाले लाभ का विवरण दिया है। इन पशुओं की रक्षा से देश की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ व सशक्त होती है। महर्शि दयानन्द अन्य प्राणियों की रक्षा पर भी प्रकाश डालते हुए गोकरूणानिधि पुस्तक में लिखते हैं 'जैसे ऊंट-ऊंटनी से लाभ होते हैं, वैसे ही घोड़े-घोड़ी और हाथी आदि से अधिक कार्य सिद्ध होते हैं। इसी प्रकार सुअर, कुत्ता, मुर्गा, मुर्गी और मोर आदि पक्षियों से भी उपकार लेना चाहें तो ले सकते हैं, परन्तु सबकी रक्षा उत्तरोत्तर समयानुकूल होवेगी। वर्तमान में परमोपकारक गौ की रक्षा में मुख्य तात्पर्य है। दो ही प्रकार से मनुष्य आदि का प्राणरक्षण, जीवन, सुख, विद्या, बल और पुरुषार्थ आदि की वृद्धि होती है-एक अन्नपान, दूसरा आच्छादन। इनमें से प्रथम के बिना तो सर्वथा प्रलय और दूसरे के बिना अनेक पकार की पीड़ा प्राप्त होती है।'

महर्षि दयानन्द के आगामी शब्द तो प्रत्येक देशवासी को बार-बार पढ़ने चाहिये-'देखिए, जो पशु निःसार घास-तृण पत्ते, फल-फूल आदि खावें और दूध आदि अमृतरूपी रत्न देवें, हल-गाड़ी आदि में चलके अनेकविध अन्न आदि उत्पन्न कर, सबके बुद्धि, बल, पराक्रम को बढ़ाके नीरोगता करें, पुत्र-पुत्री और मित्र आदि के समान मनुष्यों के साथ विश्वास और प्रेम करे, जहां बांधे वहीं बंधे रहें, जिधर चलावें उधर चलें, जहां से हटावें वहां से हट जावें, देखने और बुलाने पर समीप चले आवें, जब कभी व्याघ्रादि पशु वा मारने वाले को देखें, अपनी रक्षा के लिए पालन करने वाले के समीप दौड़कर आवें कि यह हमारी रक्षा करेगा। जिसके मरे पर चमड़ा भी कण्टक आदि से रक्षा करे, जंगल में चर के अपने बच्चे और स्वामी के लिए दूध देने के नियत स्थान पर नियत समय पर चलें आवें, अपने स्वामी की रक्षा के लिए तन-मन लगावें, जिनका सर्वस्व राजा और प्रजा आदि मनुष्य के सुख के लिए है, इत्यादि शुभगुणयुक्त, सुखकारक पशुओं के गले छुरों से काटकर जो मनुष्य अपना पेट भर, सब संसार की हानि करते हैं, क्या संसार में उनसे भी अधिक कोई विश्वासघाती, अनुपकारक, दुःख देनेवाले और पापी मनुष्य होंगे?' एक स्थान पर स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि 'गो आदि पशुओं के नाश होने से राजा और प्रजा दोनों का नाश होता है।' हमें इस चेतावनी में सच्चाई दिखाई देती है। स्वामी दयानन्द की यह पंक्तियां स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य हैं। हम समझते हैं कि कोई बुद्धिशील, ज्ञानी व विवेकी व्यक्ति यदि इन पंक्तियों को पढ़ ले तो वह जीवन में मांसाहार नहीं कर सकता।

मनुष्य गोमांस व अन्य पशु-पक्षियों के मांस का सेवन अपनी अज्ञानता, बुद्धिहीनता, मूर्खता व अविवेकशीलता आदि कारणों से करता है। उसका ध्यान कभी इन बातों पर गया ही नहीं कि जिसका उल्लेख महर्षि दयानन्द ने अपनी पुस्तक गोकरुणानिधि में करते हुए कहा है कि--''सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर ने इस सृष्टि में जो-जो पदार्थ बनाये हैं, वे-वे निष्प्रयोजन नहीं, किन्तु एक-एक वस्तु अनेक-अनेक प्रयोजन के लिए रचा है, इसलिए उनसे वही प्रयोजन लेना न्याय है, अन्यथा अन्याय। देखिए, जिस लिए नेत्र बनाया है, इससे वही कार्य लेना उचित होता है, न कि उससे पूर्ण प्रयोजन न लेकर बीच ही में नष्ट कर दिया जावे। क्या जिन-जिन प्रयोजनों के लिए परमात्मा ने जो-जो पदार्थ बनाये हैं, उन-उनसे वे-वे प्रयोजन न लेकर उनको प्रथम ही नष्ट कर देना सत्पुरुषों के विचार में बुरा कर्म नहीं है? पक्षपात छोड़कर देखिए, गाय आदि पशु और कृषि आदि कर्मों से सब संसार को असंख्य सुख प्राप्त होते हैं वा नहीं? जैसे दो और दो चार, वैसे ही सत्यविद्या से जो-जो विषय जाने जाते हैं, वे अन्यथा कभी नहीं हो सकते।''

स्वामी दयानन्द द्वारा अपनी इसी पुस्तक की भूमिका में हृदय को प्रभावित करने वाले कहे शब्दों का उल्लेख पाठकों के हितार्थ करना आवश्यक समझते हैं जिसमें वह कहते हैं-''वे धर्मात्मा, विद्वान लोग धन्य हैं, जो ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव, अभिप्राय, सृष्टिक्रम, प्रत्यक्षादि प्रमाण और आप्तों के आचार से अविरुद्ध चलके सब संसार को सुख पहुंचाते हैं और शोक है उन पर जो कि इनसे विरुद्ध स्वार्थी, दयाहीन होकर जगत् की हानि करने के लिए वर्तमान हैं। पूजनीय जन वो हैं जो अपनी हानि हो तो भी सबका हित करने में अपना तन, मन, धन सब-कुछ लगाते हैं और तिरस्करणीय वे हैं जो अपने ही लाभ में सन्तुष्ट रहकर अन्य के सुखों का नाश करते हैं। सृष्टि में ऐसा कौन मनुष्य होगा जो सुख और दुःख को स्वयं न मानता हो? क्या ऐसा कोई भी मनुष्य है कि जिसके गले को काटे वा रक्षा करें, वह दुःख और सुख को अनुभव न करे? जब सबको लाभ और सुख ही में प्रसन्नता है, तब विना अपराध किसी प्राणी का प्राण-वियोग करके अपना पोषण करना सत्पुरुषों के सामने निन्द्य कर्म क्यों न होवे? सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर इस सृष्टि में मनुष्यों की आत्माओं में अपनी दया और न्याय को प्रकाशित करे कि जिससे ये सब दया और न्याययुक्त होकर सर्वदा सर्वोपकारक काम करें और स्वार्थपन से पक्षपातयुक्त होकर कृपापात्र गाय आदि पशुओं का विनाश न करे कि जिससे दुग्ध आदि पदार्थों और खेती आदि क्रिया की सिद्धि से युक्त होकर सब मनुष्य आनन्द में रहें।'' अपनी मृत्यु से पूर्व स्वामी दयानन्द ने गोरक्षा का एक अभियान चलाकर गोरक्षा के पक्ष व गोहत्या के विरुद्ध ब्रिटिश पार्लियामेंट के नाम पत्र लिखकर उसके समर्थन में देश के राजा-महाराजाओं से लेकर सामान्य व्यक्ति तक करोड़ों लोगों के हस्ताक्षर कराये और उन्हें इंग्लैण्ड की पार्लियामेंट को भेजा। इससे पूर्व की उसका कोई परिणाम निकलता और वह कोई और बड़ा आन्दोलन करते, 30 अक्तूबर, 1883 ई. को उनकी मृत्यु हो गई। इंग्लैण्ड की सरकार ने उनके उस देशहित व मानवता का पोषण करने वाले परिश्रम को निर्दयतापूर्वक रद्दी की टोकरी में ही नहीं डाला दिया अपितु इसके विपरीत कार्य किया। इससे ब्रिटिश सरकार की रीति व नीति का पता चलता है।

गोरक्षा पर उपलब्ध साहित्य में स्वामी दयानन्द की पुस्तक ''गोकरुणानिधि'' के अतिरिक्त इनके अनुयायी पं. प्रकाशवीर शास्त्री द्वारा लिखित 'गोहत्या या राष्ट्रहत्या' पुस्तक भी पठनीय है। स्वामी ओमानन्द ने 'गोदुग्ध अमृत है' नाम से एक उपयोगी व जानकारियों से भरपूर महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी है। स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने ''गो की गुहार'' नाम से गोकरुणानिधि पर भाष्य व टीका लिखी है। स्वाध्याय करते हुए हमने मेहता जैमिनी की ''गऊ भारत माता की प्राणदाता'' पुस्तक का विवरण पढ़ा जिसके विषय में आर्यजगत के विख्यात विद्वान प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु ने लिखा है कि ''हमने गऊमाता पुस्तक पर एक विहंगम दृष्टि डालकर देखा है कि लगभग एक सौ पृष्ठों की इस पुस्तक में 50 से ऊपर पुस्तकों को उद्धृत किया गया है। वेद, उपनिषद् आदि के प्रमाण इनके अतिरिक्त हैं। इसी प्रकार देश विदेश के 50 से ऊपर डाक्टरों, वैज्ञानिकों, विद्वानों व साहित्यकारों के नाम इसमें प्रमाण स्वरूप दिये हैं। आंकड़े इतने दिये हैं कि हम गिन ही नहीं पाये। इससे हमारे पाठक पुस्तक के लेखक श्री मेहता जैमिनी के पाण्डित्य की कुछ कल्पना कर सकते हैं।''

हम समझते हैं कि भारत की उन्नति के लिए गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने के साथ गोसंवर्धन पर ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है। तभी भारत पूर्ण उन्नत होकर ज्ञान-विज्ञान व जीवन में सुख-शान्ति प्राप्त करने में समर्थ हो सकेगा।

-196, चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।